सद्गुरु से सत्य प्रकाश

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सद्गुरु से सत्य प्रकाश मिलता है। सत्य प्रकाश क्या है? ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है ऐसा कहा जाता है। महात्मा गांधी ने कहा था कि कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। कथनी और करनी की एकता सत्य को प्रकट करती है। अंधेरे में एक छोटा सा दीपक जला दिया जाये तो अंधकार नष्ट हो जाता है। ज्ञान स्वपर प्रकाशक होता है। सत्यप्रकाश यदि जीवन में आ गया तो जीवन धन्य हो जाता है। सत्य से व्यक्ति निर्भय होता है। एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं। इसलिए झूठ नहीं बोलना चाहिए। सत्य की परिक्षा होती है। उस परिक्षा में विचलित नहीं होना चाहिए। गुरु सत्य ज्ञान देकर शिष्य को प्रकाशित करता है। कबीरदासजी ने ईश्वर से भी अधिक महत्व गुरु को दिया है, क्योंकि गुरु शिष्य के ज्ञानरूपी नेत्र को उद्घाटित करके ईश्वर का साक्षात्कार करा देता है। गुरु कुम्भकार के समान है और शिष्य घड़े के समान। जैसे कुम्भकार घड़े के निर्माण के समय यह ध्यान रखता है कि घड़ा सुडौल और अच्छा बने, वैसे ही गुरु भी शिष्य को ऐसा बनाना चाहता है कि उसका जीवन निर्माण हो सके। जीवन में उसे कठिनाईयों का सामना ना करना पड़े। इसलिए सद्गुरु से ही सत्य प्रकाश मिलता है। छत्रपति शिवाजी के निर्माण में समर्थ गुरु रामदास, विवेकानन्द के निर्माण में स्वामी रामकृष्ण परमहंस का महत्त्वपूर्ण योगदान था। ऐसे गुरु ही योग्य शिष्य का निर्माण करते हैं। गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता। गुरु ही ज्ञान का प्रकाश देकर अंधकार को दूर करता है। गुरु विश्वामित्र ने साधु का रूप बनाकर राजा हरिशचन्द्र से पूरा राज्य मांगा और उन्होंने गुरु विश्वामित्र को सबकुछ दान देकर एक चंडाल के घर श्मशान में रहकर जीवन निर्वाह किया। किंतु सत्य से समझौता नहीं किया। सत्य की परिक्षा में वह उत्तीर्ण हुये। विश्वामित्र ने उनका पूरा राजपाठ वापस कर दिया। सत्य की परिक्षा में जो खरा उतरता है उसका जीवन धन्य हो जाता है। जिसमें आवश्यकता और

अपेक्षा अधिक होती है उसका जीवन दुःखी ही रहता है। वह अपनी इच्छाओं को पूरा करने में ही व्यस्त रहता है। इच्छाएं कभी पूरी नहीं हो सकती। जिसका परिणाम यह होता हैं कि वह व्यक्ति सदैव दुःखी ही रहता है। ज्ञान के बिना मानव अधूरा है।

ज्ञान ही मानव को पूर्ण मानव बनाता है। अन्य प्राणियों से ज्ञान ही एक ऐसा तत्व है जो मानव को अलग करता है। ज्ञान कैसे प्राप्त हो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। गुरु ज्ञान का दीपक मानव के अन्दर जलाता है, जिससे मानव पूर्ण मानव बनता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा बताया गया है। गुरु ही ईश्वर का ज्ञान कराता है। कबीरदासजी ने लिखा है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

प्राचीनकाल में मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया गया था– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली थी। यह व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक रीति पर आधारित थी। मानव जीवन की आयु सौ वर्ष मानकर पच्चीस–पच्चीस वर्षों में विभक्त कर दी गयी थी। इस आश्रम में शिष्य गुरु के सान्निध्य में जाकर के शिक्षा प्राप्त करता था। भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि ज्ञान अथवा विद्या से मुक्ति प्राप्त होती है। समाज में दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे लोग जो प्रत्येक कार्य समझकर बुद्धि से करते हैं और दूसरे वे लोग जो बिना समझे कार्य करते हैं। जो कर्म समझ कर किया जाता है वही कर्म शक्तिशाली तथा सफल होता है। मनु के अनुसार जन्म से सभी मनुष्य शूद्र उत्पन्न होते हैं परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान और कर्म से वे द्विज बन जाते हैं। शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करती है। गुरु के आश्रम में शिष्य बौद्धिक और मानसिक अनुशासन सीखता है। मानव का जीवन ज्ञान से ही धर्म प्रवण, नैतिक मूल्यों से युक्त, उच्च आदर्शों से संवलित और बहुमुखी व्यक्तित्व से युक्त होता है। अतः धार्मिक वृत्तियों का उत्थान, चरित्र का उत्थान, व्यक्तित्व का उत्थान, सामाजिक उत्तरदायित्वों का निष्पादन और सांस्कृतिक

जीवन का उत्थान शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इस उद्देश्य को सफल करने में पूर्ण समर्थ थी। विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षार्जन करता था। गुरु का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। प्राचीनकाल में गुरु और शिष्य का संबंध पिता और पुत्र जैसा था इसलिए शिष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह गुरु के प्रति द्रोह न करे। शिष्य अथवा विद्यार्थी के लिए विद्यार्जन के प्रति निष्ठावान तथा जिज्ञासु होना आवश्यक था। गुरु उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति और कर्त्तव्य बुद्धि की जानकारी रखता था। प्रतिभावान और सुयोग्य शिष्य को चुनना गुरु की कुशलता का परिचायक था। गुरु की यह विशेष कुशलता होती थी कि वह मंद बुद्धि छात्र के मस्तिष्क में ज्ञान का मंत्र फूंककर उसे विद्या सम्पन्न बना दे। गुरुकुल आश्रम में शिष्य को सात्विक प्रवृत्ति से रहना पड़ता था। जैसे पक्षी अपने बच्चों को आकाश में उड़ने के लिए प्रेरित कर उसमें गति प्रदान करता है, वैसे ही गुरु भी शिष्य को अपने पैरों पर चलने के योग्य बना देता है।